आज़ादी का अमृत महोत्सव
एवं
चौरी–चौरा शताब्दी महोत्सव
के अन्तर्गत

उत्तर प्रदेश दिवस

24–26 जनवरी, 2022

के अवसर पर

अयोध्या शोध संस्थान
संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा

रामलीला एवं मुखौटों की प्रदर्शनी

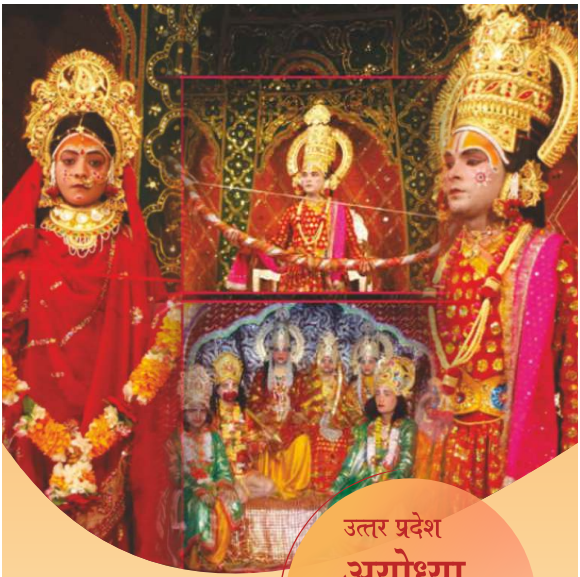

उत्तर प्रदेश

अयोध्या की रामलीला

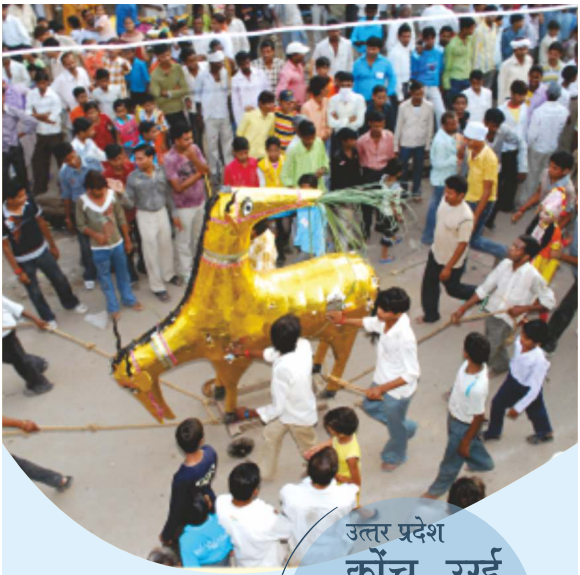

उत्तर प्रदेश

कोंच, उरई की रामलीला

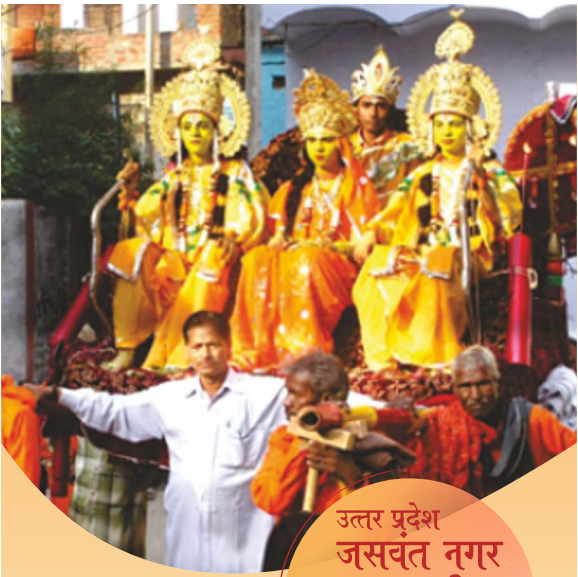

उत्तर प्रदेश

जसवंत नगर इटावा की रामलीला

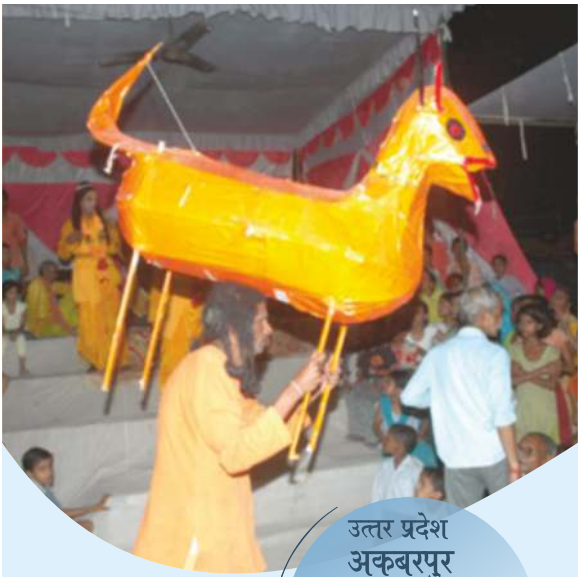

उत्तर प्रदेश

अकबरपुर कानपुर देहात की रामलीला

उत्तर प्रदेश

काशी की रामलीला

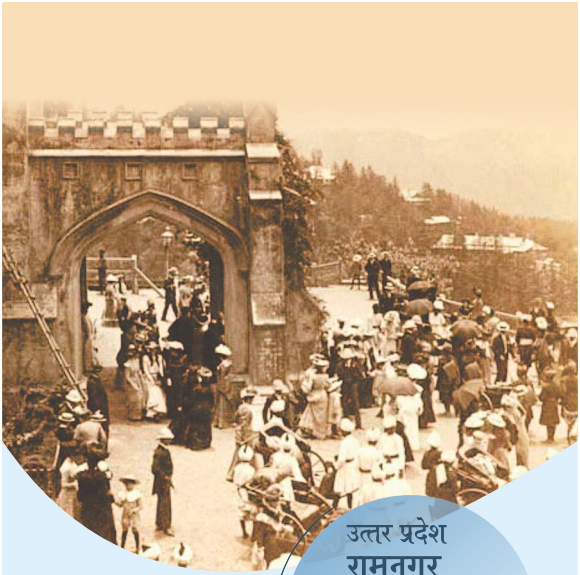

उत्तर प्रदेश

रामनगर वाराणसी की रामलीला

भारत की अत्यन्त प्राचीन प्रसिद्ध रामलीला रामनगर की है। आज भी बिना आधुनिक ध्वनि उपकरणों तथा प्रकाश व्यवस्था के पारम्परिक रूप से मंचित की जा रही है।

उत्तर प्रदेश

बलिया की रामलीला

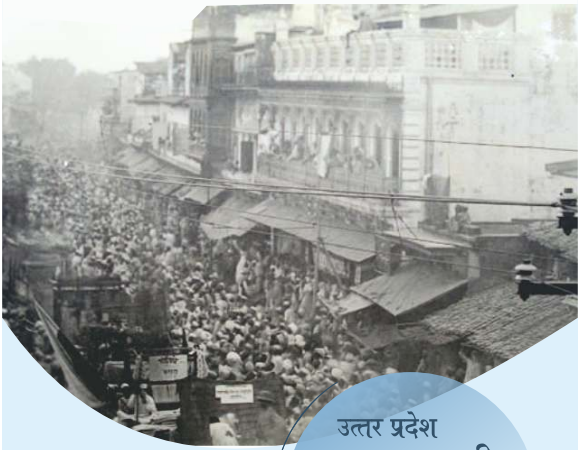

उत्तर प्रदेश

प्रयागराज की रामलीला

पुलिस की फाइल से 1921 में मंचित होने वाली प्रयाग की रामलीला स्वतंत्रता संग्राम में भी अपने योगदान से जुड़ी हुयी है।

मध्य प्रदेश

रंगश्री लिटिल बैले ट्रुप भोपाल

राजस्थान

स्ट्रिंग पपेट रामलीला

उत्तराखण्ड

रम्मण चमोली उत्तराखण्ड की रामलीला

रम्मण, उत्तराखण्ड की अत्यन्त प्राचीन विधा है। जिसे यूनेस्को ने विश्व विरासत भी घोषित किया है।

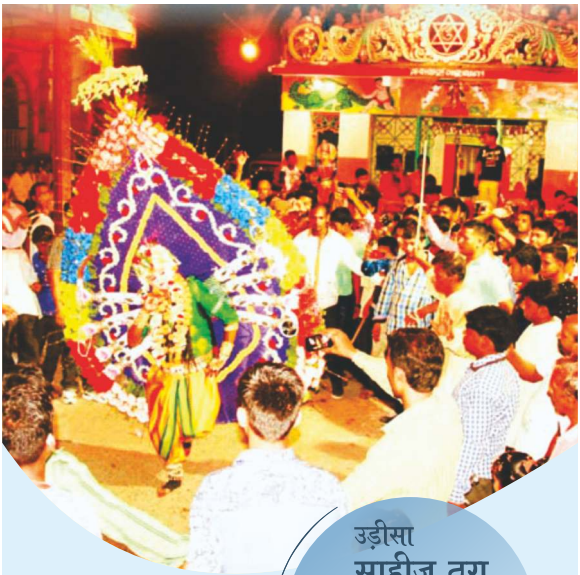

उड़ीसा साहीज तरा भुवनेश्वर की रामलीला

दशवीं ग्यारहवीं शताब्दी से भुवनेश्वर ओडिसा में गलियों में रामलीला के पात्रों के द्वारा शोभा यात्रा निकाली जाती है।

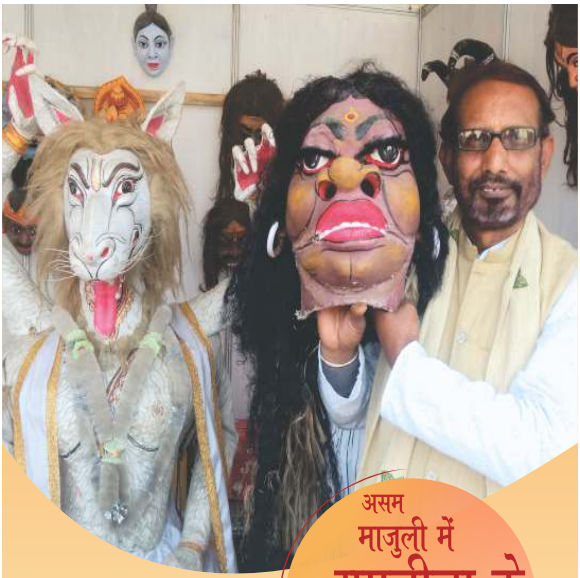

असम

माजुली में रामलीला के मुखौटे

असम में वैष्णव संस्कृत के केंद्र माजुली के क्षत्रपों ''मठों'' में मुखौटे बनाने की संस्कृति–हेम चंद गोस्वामी के उल्लेख के बिना अधूरी होगी। गोस्वामी, द्वीप के सामगुरी सातरा से, 16वीं शताब्दी के असम में संत–विद्वान शंकरदेव द्वारा पेश किए गए शास्त्रीय नृत्य के रूप में, सतारिया में इस्तेमाल किए जाने वाले मेकअप के क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता के लिए जाने जाते हैं, लेकिन यह मुखौटे बनाने में उनका योगदान है गोस्वामी का बाहर खड़ा करता है। मुखौटे अभी तक एक और अनूठी कला है जिसे संकार्डीवा ने पेश किया और गोस्वामी ने अपनाया।

जलवायु, निधियों की कमी और सीमित मांग के कारण, हेम चंद्र गोस्वामी सदियों पुरानी लोक कलाओं को मुखौटा बनाने का एक और संपन्न परंपरा बनाए रखने के लिए प्रयास रत है।

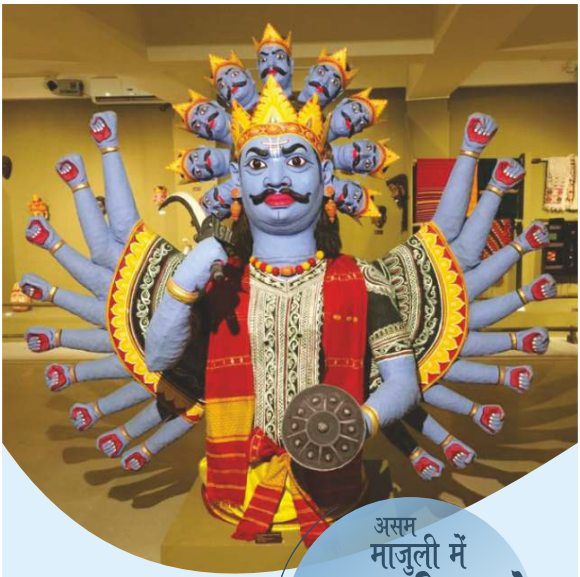

असम

माजुली में रामलीला के मुखौटे

पिछले 35 वर्षों में, गोस्वामी ने बड़ी संख्या में छात्रों को सिखाया है कि लोक थिएटर में इस्तेमाल होने वाले पारंपरिक मुखौटे को कैसे बनाया जाए। शंकरदेव ने इस रूप का प्रचार उन लोगों से संबंधित किया, जो उन्होंने लिखे धार्मिक नाटकों से संबंधित थे। गोस्वामी को इस रूप में उनके अतिरिक्त योगदान के लिए याद किया जाएगा, बाँस के साथ 'बोलने' वाले मास्क का एक अनूठा सेट बनाने के लिए जो अभिनेताओं को उन्हें पहनते समय संवाद में मदद करते हैं।

असम

माजुली में रामलीला के मुखौटे

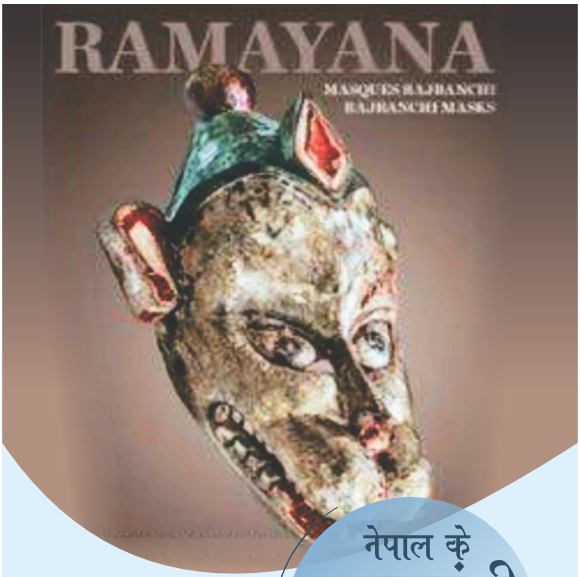

नेपाल के राजवंशी मुखौटे

सूरीनाम में रामलीला के मुकुट

सूरीनाम में रामलीला के अस्त्र शस्त्र

सूरीनाम में रामलीला के वेशभूषा

नेपाल के पारंपरिक मुकुट

नेपाल के पारंपरिक मुखौटों को दो प्रकार में विभाजित किया जा सकता है, ''आदिवासी'' मुखौटे जो जातीय समूहों जैसे गुरूंग, मगर, थारू, राय आदि के हैं और जिन्हे ''शामन'' के मुखौटे के रूप में भी जाना जाता है, और ''शास्त्रीय'' मुखौटे जो हिन्दू और बौद्ध देवी–देवताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। शास्त्रीय नेपाली मुखौटे हमेशा देवताओं या राक्षसों का प्रतिनिधित्व करते हैं और मृत या पूर्वजों का कभी नहीं। इसके अलावा, जुलूसों और अनुष्ठानों में नाटकीय प्रदर्शन के बजाय अधिक बार उपयोग किए जाते हैं।

मास्क की तीन श्रेणियां हैं, पहला, देवताओं के चेहरे का प्रतिनिधित्व करने वाले मुखौटे, जो ज्यादातर रस्म नृत्य के दौरान मनुष्य द्वारा पहने जाते हैं, दूसरी श्रेणी, जो मंदिर को सजाने के लिए सजावटी रूपांकनों के रूप में काम करते हैं, जुलूस के दौरान एक रथ, एक फूलदान के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। एक अनुष्ठान वस्तु। एक तीसरी श्रेणी, में धातु या पत्थर के मुखौटे शामिल हैं जो एक देवता के चेहरे का भी प्रतिनिधित्व करते हैं और जिन्हें मूर्तियों की तरह पूजा जाता है। उन्हें प्रतिमा–मुखौटे कहा जाता है। उन्हें बनाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली धातु चांदी, पीतल या कांस्य है। इन मुखौटे को अक्सर गहनों से सजाया जाता है और जब उनकी पूजा नहीं की जाती है तो उन्हें मंदिर के अंदर लकड़ी के बक्से में रखा जाता है।

नेपाल के पारंपरिक मुकुट

अनुष्ठानों में उपयोग किए जाने वाले मुखौटे ऐसे सामग्रियों से बने होते हैं जैसे कि पपीर माछ, मिट्टी और लिनन के साथ लकड़ी का प्लास्टर, और जीवंत रंगों में चित्रित किया जाता है। इसलिए, ऐसे मुखौटे कभी पुराने नहीं होते क्योंकि वे ऐसी जलवायु में लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकते। इसके अलावा, परंपरा के अनुसार कई मुखौटों को उपयोग के बाद नष्ट कर दिया जाता है और अगले वर्ष फिर से बनाया जाता है। सबसे पुरानी ज्ञात नेपाली मुखौटे 17वीं शताब्दी से हैं। मुखौटे द्वारा दर्शाए गए देवता कई हैं, शिव, भैरव, गणेश, कुमारी, वरही, दुर्गा, लक्ष्मी, सिमा और दूमा ये अंतिम दो शेर और बाघ के लिए लोकप्रिय नाम कहे जाते हैं। कुछ लोग बताते हैं कि ये दो मुखौटे एक जोड़े हैं, सफेद चेहरे वाले सिमा पुरुश हैं, दूसरों को लगता है कि वे दो देवी हैं।

नेपाल के पारंपरिक मुकुट

नेपालः मुखौटे मिट्टी के बने होते हैं जो कपास के टुकड़ों के साथ मिश्रित होते हैं और गेहूं के आटे से बने गोंद जैसे पेस्ट होते हैं। मिट्टी के मुखौटे के रूपों को लगभग चार दिनों तक सांचों पर सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। बाद में मुखौटे रंगे जाते हैं। प्रत्येक रंग का एक निश्चित महत्व है, लाल क्रोध से जुड़ा होता है, ऊर्जा और शक्ति के साथ नीला काला, पवित्रता और मृत्यु के साथ सफेद। पहले केवल सब्जी और खनिज रंगों का उपयोग किया जाता था। अब चित्रकार मुख्य रूप से रासायनिक रंगों का उपयोग करते हैं।

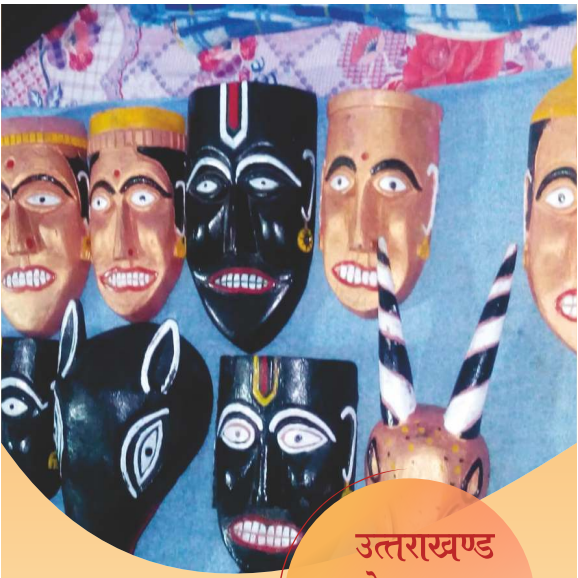

उत्तराखण्ड के मुखौटे

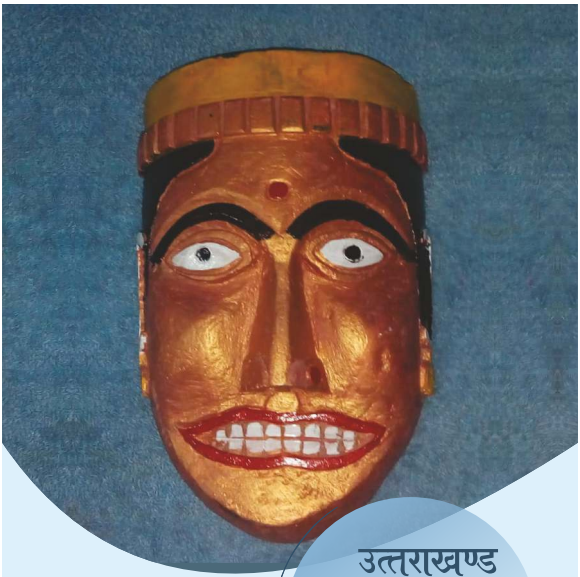

उत्तराखण्ड के मुखौटे

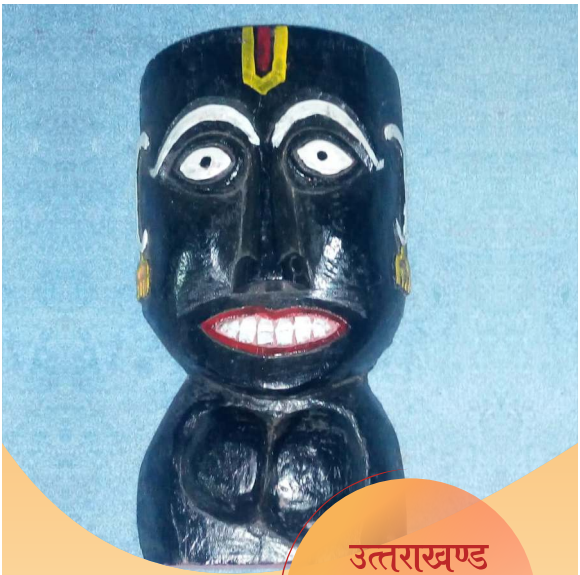

उत्तराखण्ड के मुखौटे

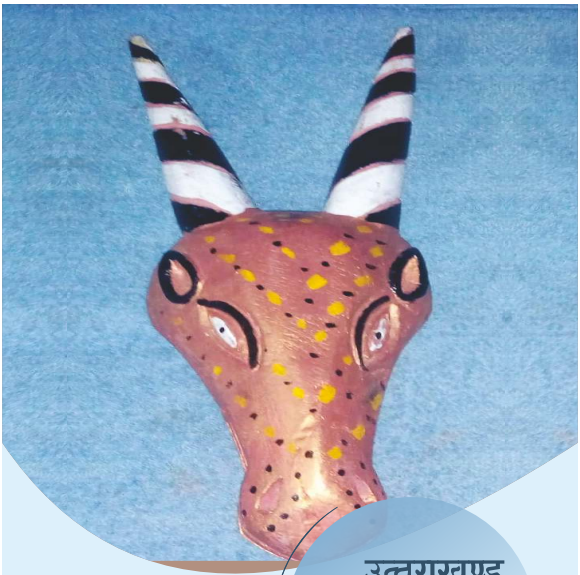

उत्तराखण्ड के मुखौटे

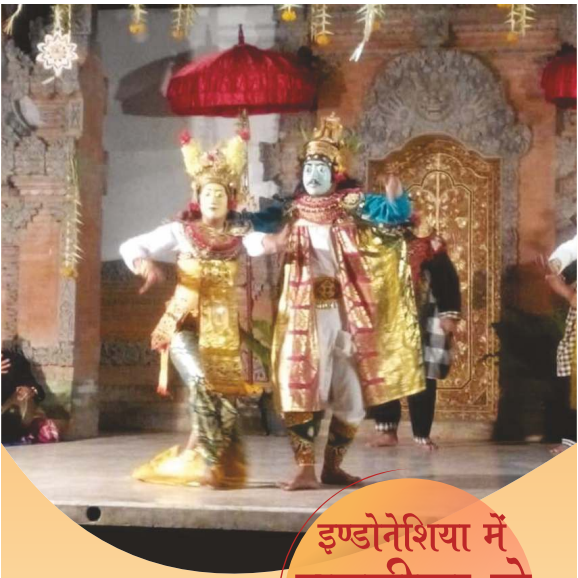

इण्डोनेशिया में रामलीला के मुखौटे

इण्डोनेशिया में रामलीला के मुखौटे

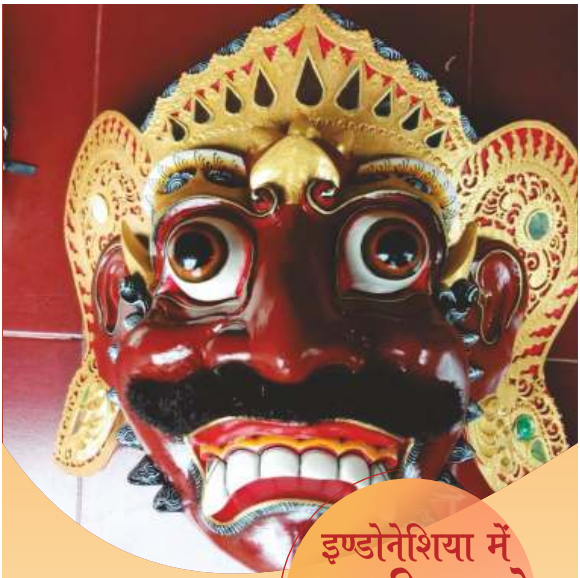

इण्डोनेशिया में रामलीला के मुखौटे

थाईलैण्ड में रामलीला के मुखौटे

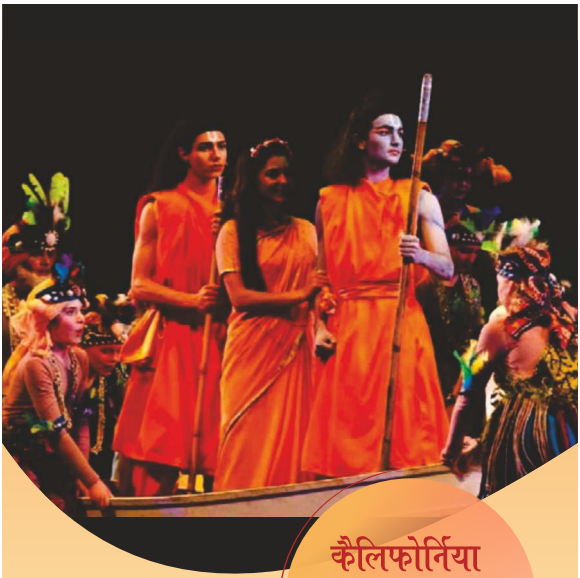

कैलिफोर्निया की रामलीला

कैलिफोर्निया के माउण्ट मेडोना स्कूल में विगत 40 वर्षों से जून के प्रथम सप्ताह में टिकट लगाकार रामलीलाएं की जाती है। इसमें लगभग 250 बच्चे तीन महीने तक प्रशिक्षण प्राप्त कर रामलीलाएं करते हैं। पूरी दुनिया के लिए यह एक उदाहरण है।

कैलिफोर्निया की रामलीला

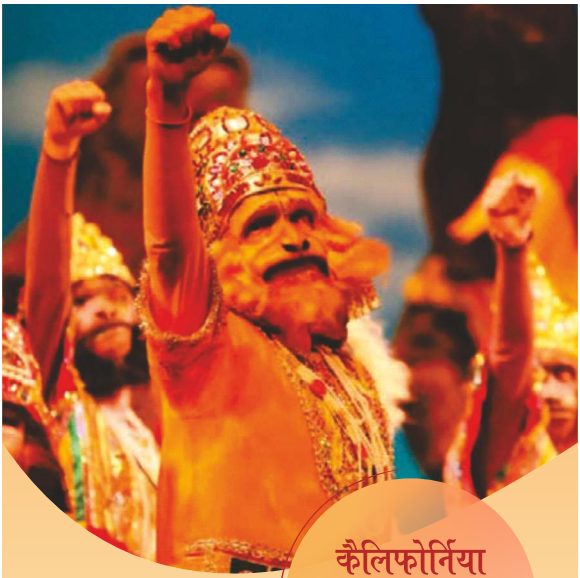

कैलिफोर्निया की रामलीला

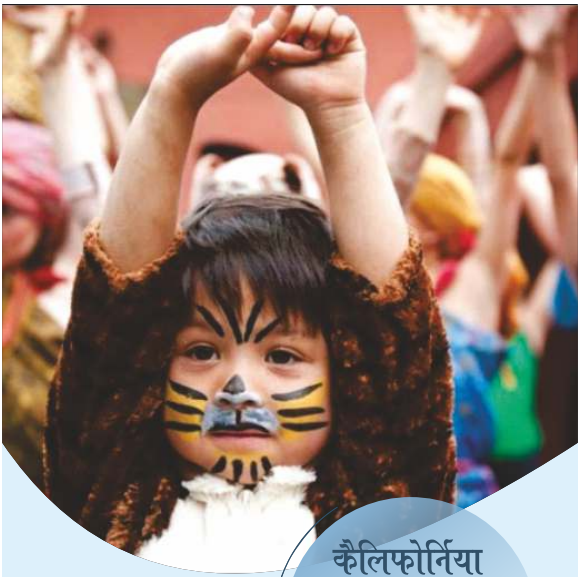

कैलिफोर्निया की रामलीला

अमेरिका जैसे देश के कैलीफोर्निया प्रांत में मांउट मैडोना स्कूल के बच्चों का स्कूलों में रामलीला खेलना कोई बड़ी बात नहीं हैं। बात तो यह है कि रामलीला पर शोध करते हुए उसके हर पक्ष पर सुधार कर भारत की परंपरा व अमेरिका की आधुनिकता का सामंजस्य करते हुए निरंतर अभ्यास करना हैं।

कम्बोडिया की रामलीला

रामायण पर आधारित कंबोडियन रामायण।

गयाना की रामलीला

गयाना रामलीला केंद्र

मॉरीशस की रामलीला

रामायण सेन्टर मे छात्रो द्वारा की जाने वाली रामलीला

गयाना की रामलीला

रामायण सेन्टर मे छात्रो द्वारा की जाने वाली रामलीला

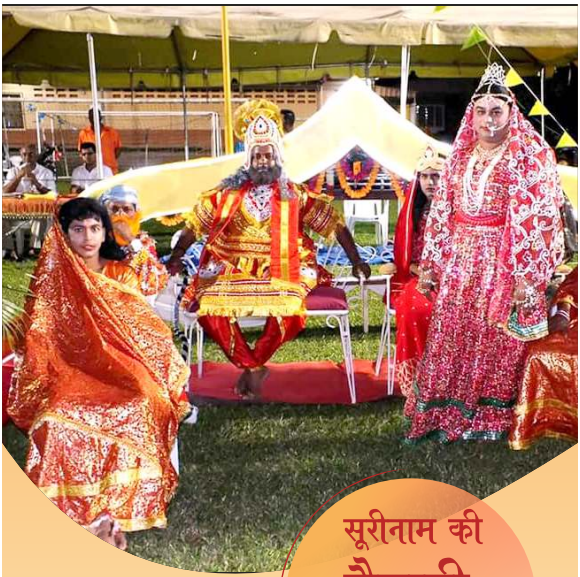

सूरीनाम की मैदानी रामलीला

सूरीनाम की मैदानी रामलीला

सूरीनाम की मैदानी रामलीला

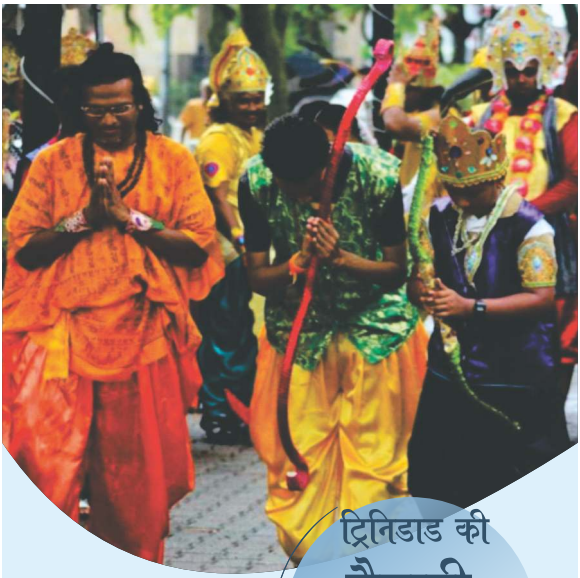

ट्रिनिडाड की मैदानी रामलीला

ट्रिनिडाड की मैदानी रामलीला

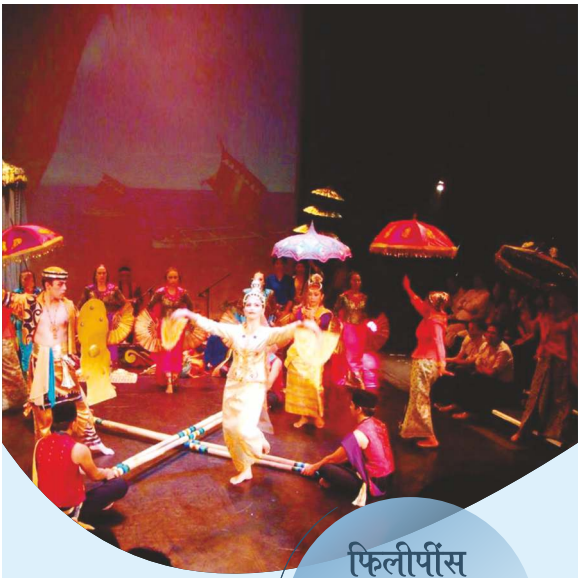

फिलीपींस की रामलीला

फिलीपींस में रामायण को महलादिया लावना कहा जाता है जिसका अर्थ है ''राजा रावण'' फिलीपींस से सिंगकिल का प्रसिद्ध नृत्य फिलीपिन के रामायण से प्रेरित है। यह द्वीप राष्ट्र के झील लानाओं के मारानाओ लोगों का लोक नृत्य है।

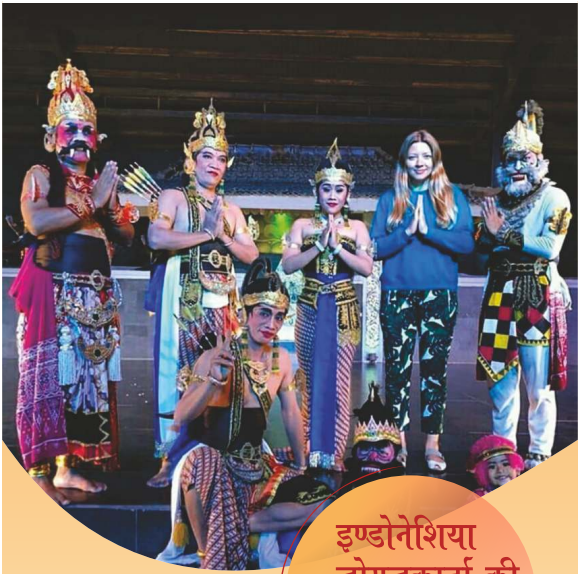

इण्डोनेशिया जोगजकार्ता की रामलीला

इन्डोनेशिया धर्म इस्लाम तथा संस्कृति रामायण है।
यह विश्व का आदर्श है। धर्म एवं संस्कृति में।

इण्डोनेशिया की रामलीला

बाली की चकचक रामायण का एक दृश्य

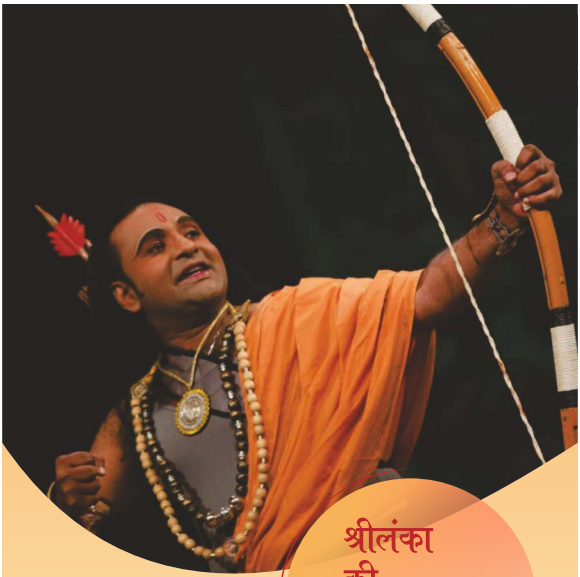

श्रीलंका की रामलीला

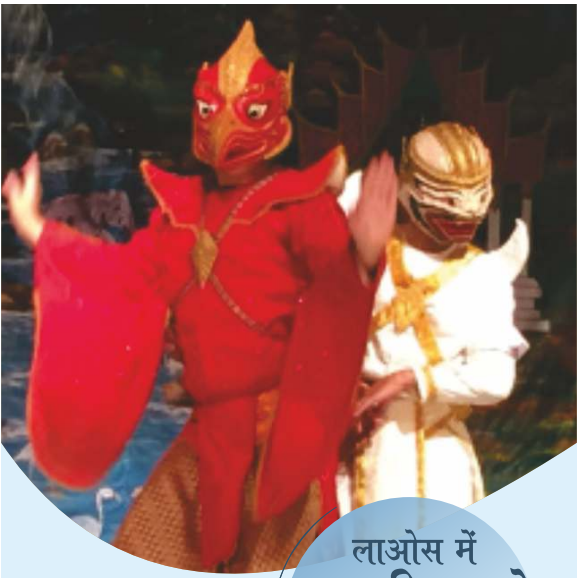

लाओस में रामलीला के मुखौटे

रॉयल थिएटर की गहराई में लोओ मास्क का सबसे सुंदर संग्रह है, लगभग एक सौ मास्क बड़े कांच के मामलो में नाजुक रूप से व्यवस्थित हैं मुखौटे एक पपियर आधार से बने होते हैं और फिर उन्हे महीन प्लास्टर, पेंट और वार्निश के साथ ढाला जाता है। विविध सजावटी तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

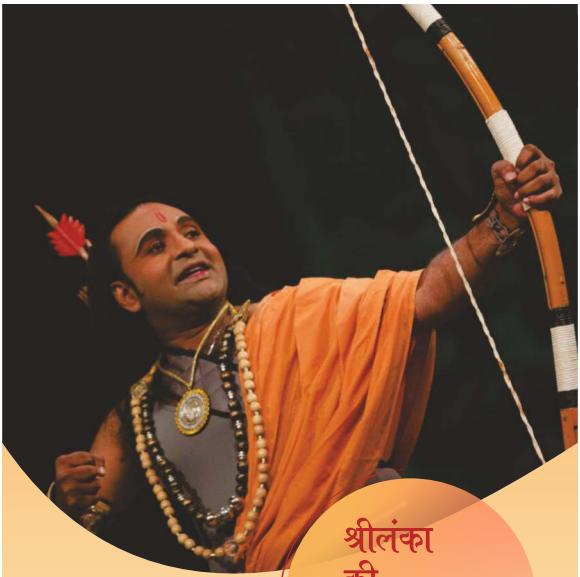

श्रीलंका की रामलीला